International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct., 2025, pp: 56-59 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

''उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन''

प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख

शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ, राजस्थान।

अनिता पूनियाँ

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ, राजस्थान।

Date of Submission: 01-09-2025 Date of Acceptance: 09-09-2025

➢ **सारांश :–**

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें हनुमानगढ जिले में स्थित हिंदी और अंग्रेजी माध्यम में पृथक्–पृथक् विद्यालयों में अध्ययनरत् विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उपलब्धि स्तर पर शिक्षा के माध्यम के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोधार्थी ने पाया कि जो विद्यार्थी प्राथमिक स्तर से ही अपनी मातृभाषा या सामान्य जीवन में संप्रेषण हेतु प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के माध्यम से शिक्षण कर रहे है उनमें सृजनात्मक कौशल उत्तम स्तर का पाया गया तथा उनकी शैक्षणिक प्रगति भी अन्य भाषा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च रही। साथ ही मातृभाषा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक कुशलता, व्यवहारगत कार्य शैली एवं आत्म अभिव्यक्ति उन विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर के थे जो मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा से शिक्षण प्राप्त कर रहे थे। इसके अतिरिक्त शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि मातृभाषा में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने का औसत अन्य भाषा में विद्यार्थियों से अधिक था। अतः विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षा के माध्यम का उनकी सृजनात्मकता और उपलब्धि स्तर पर व्यापक प्रभाव पडता है जो बालको की विकास प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है।

➢ **शोध का उद्देश्य :–** प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

➢ **तकनीकी शब्दावली :–** शिक्षा, माध्यम, विद्यार्थी, सृजनात्मकता, उपलब्धि, स्तर एवं प्रभाव।

➢ **प्रस्तावना :–**

शिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना है, जिससे व्यक्ति सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर उनके अनुकूल आचरण कर एक कर्मठ एवं सुयोग्य नागरिक बन सके। वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढालने का प्रयास ही शिक्षा है, इससे बालक के स्वाभाविक विकास में सहायता प्राप्त होती है, व्यक्ति और समाज दोनों को ही मार्ग प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में शिक्षा को जाना जाता है एक और शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार एवं विकास करने वाली प्रक्रिया है, तो दूसरी ओर सम्पूर्ण समाज को नियंत्रित एवं संस्कारित करने वाली प्रणाली है। शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र संपन्न एवं सुयोग्य नागरिक बनकर अपने राष्ट्र एवं समाज की सर्वांगीण उन्नति से अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct., 2025, pp: 56-59 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

होकर अपनी संस्कृति और सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित होता है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वागीण विकास करके उसे तेजस्वी, ज्ञानी, बुद्धिमान चरित्रवान, विद्वान, वीर तथा निर्भिक बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। जैसा कि कोठारी शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है – ''भावी भारत का निर्माण वर्तमान कक्षा–कक्ष में हो रहा है।'' राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति को जीवंत और चीरकाल तक अक्षुण्ण बनायें रखने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनायें क्योंकि किसी विदेशी या अन्य भाषा को शिक्षा माध्यम बनायें जाने से हम अपनी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से किसी अन्य संस्कृती का बीजारोपण अपने समाज में अनायास ही कर बैठते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में भी यह दोहराया गया है कि बच्चें अपनी मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते है। जैसा कि दूनिया के कई विकसित देशों में यह देखने को मिलता है कि अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में शिक्षित होना कोई बाधा नही है, बल्कि वास्तव मे शैक्षिक, सामाजिक और तकनीकी प्रगति के लिए बहुत बड़ा लाभ ही होता है। क्यों कि शिक्षा का माध्यम यदि बच्चों द्वारा काम में ली जाने वाली भाषा हो तो बच्चें आपस में संवाद के माध्यम से भी निरंतर सीखते रहते है और विद्यालय वातावरण के साथ वे अच्छी तरह से समायोजित हो पाते है तथा उनके सृजनात्मक कौशल और उपलब्धि स्तर में सुधार होता है।

➢ **सृजनात्मकता :–**

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी भाषा के Creativity शब्द का हिंदी पर्याय है जिसका अर्थ उत्पन्न या रचना संबंधी योग्यता से है तथा इसके समानान्तर विधायकता एवं उत्पादन जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उत्पादकता में Productivity का बोध होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन का आभास कराता है। विधायकता में एकवीकरण का बोध होता है। एक ओर शब्द है – खोज जिसे Discovery के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। ये सभी शब्द सृजनात्मकता के इर्द–गिर्द घूमते है पर उस आशय को पूरा नही करते। सृजनात्मकता में मूल शब्द सृजन है जिसमें शून्य का भाव है जिसमें उपस्थित नवीनता और मौलिकता की सृष्टि करनी पड़ती है। इस प्रकार नवीन क्रियाओं एवं विचारों को उत्पन्न करने की शक्ति या नवीन खोज करने की शक्ति अर्थात किसी के पीछे–पीछे न चलकर अपनी एक नई राह बनाने की सोच को ही हम सृजनात्मकता कहते है।

- **प्रो. रूश के अनुसार –** ''सृजनात्मकता मौलिकता है जो वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित हो सकती है।''
- **क्रो एंड क्रो के अनुसार –** ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार –** ''सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में है।''

➢ **उपलब्धि स्तर :–**

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी के सीखे गये ज्ञान का परीक्षण करने के लिए अध्यापक समय–समय पर विद्यार्थी की परीक्षा या मूल्याकंन करता है इसके साथ ही अध्यापक यह जानने के लिए कि पाठ्यक्रम के निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कहां तक हुई के लिए विभिन्न परीक्षण या मूल्याकंन करता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को बनायें रखने के लिए अध्यापक कई प्रकार के परीक्षणों का आयोजन करता हैं जिसमें प्रमुख इस प्रकार हैं–

1. निदानात्मक परीक्षण :– इस परीक्षण के माध्यम से अध्यापक छात्रों की कमजोरियों का पता लगाता है। अध्यापक प्रत्येक पाठ और इकाई पूर्ण करने के बाद उनमें छात्र को कहां समस्या है का पता निदानात्मक परीक्षण के माध्यम से ही लगाता है।

2. उपचारात्मक परीक्षण :– निदानात्मक परीक्षण के द्वारा छात्रों की कमजारियों का पता लगाने के बाद अध्यापक, छात्रों की उन कमजोरियों को दूर करने के लिए उपचारात्मक परीक्षण करता है।

3. निष्पति या उपलब्धि परीक्षण :– निष्पति परीक्षण के द्वारा अध्यापक छात्रों के उपलब्धि स्तर का पता लगाता है। निष्पति परीक्षण के माध्यम से अध्यापक अपने शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ–साथ छात्रों के स्तर के मूल्याकंन करता है तथा उनकी प्रोन्नति या अगली कक्षा में जाने का निर्णय करता है। निष्पति या उपलब्धि परीक्षण प्रत्येक इकाई, अर्द्धवार्षिक परीक्षा और वार्षिक परीक्षा के रूप में किया जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अध्यापक विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से छात्रों के उपलब्धि स्तर का पता लगाता है। छात्रों की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले अनेकों कारण है जिनके परिणामस्वरूप उनका

उपलब्धि स्तर भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भी शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

➢ शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उपलब्धि स्तर पर प्रभाव :–

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक है जैसे– विद्यालय वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षण प्रणाली, बालक का व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा, अभिरूचि, बुद्धि इत्यादि इन्हीं कारकों मे से एक कारक है शिक्षा का माध्यम जो विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षण तीनों को प्रभावित करता है। शोधकर्त्री ने अपने शोध में इसी प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है जिसके लिए शोधकर्त्री ने हनुमानगढ जिले में स्थित हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर अपना शोध किया। शोधकर्त्री ने इस कार्य हेतु सृजनात्मकता पर पङने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों को रचनात्मक कार्य जैसे– आशु भाषण, निंबंध लेखन, कहानी लेखन, चित्र बनानें और सांस्कृतिक कार्यो का आयोजन कराया। विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर पर पङने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शिक्षण व्यूह रचना में बदलाव किया, दल शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, प्रायोजना विधि, समस्या समाधान विधि, स्वेच्छिक गृह कार्य के साथ–साथ समय–समय पर निदानात्मक, उपचारात्मक, सतत् और व्यापक मूल्याकंन तथा निष्पति परीक्षण का प्रयोग किया।

शोधकर्त्री ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी अपनी मातृभाषा अथवा हिन्दी भाषा माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उनका विद्यालय में समायोजन बेहतर होने के साथ–साथ पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने का औसत अन्य भाषा में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से अधिक रहा तथा इनका अभिव्यक्ति स्तर भी उच्च पाया गया। चित्र देखकर कहानी लेखन में मातृभाषा में अध्ययनरत विद्यार्थी अन्य भाषा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में अधिक बेहतर पायें गयें। इसी प्रकार जब अध्यापकों द्वारा प्रायोजना विधि, समस्या समाधान विधि और दल शिक्षण से शिक्षण कराया गया तो मातृभाषा में पढनें वाले विद्यार्थियों ने अन्य भाषा में पढनें वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा शिघ्रता से अपने शिक्षकों के साथ अंतःक्रिया स्थापित कर ली और रूचिपूर्ण शिक्षण में सहयोग प्रदान किया। शोधकर्त्री द्वारा किये गयें निदानात्मक परीक्षण में मातृभाषा में पढनें वाले विद्यार्थियों की कमियां बहुत कम पायी गयी तथा उनके सीखने की गति व उपलब्धि स्तर अन्य भाषा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर का पाया गया।

➢ निष्कर्ष :–

शोधकर्त्री ने हनुमानगढ जिले में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से संचालित उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष स्वरूप यह तथ्य उजागर होता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शिक्षा का माध्यम आंतरिक और बाह्य दोनों स्तरों पर प्रभावित करता है साथ ही इससे बालकों की सृजनात्मकता और उपलब्धि स्तर पर भी गहरा प्रभाव पङता है। जो विद्यार्थी अपनी मातृभाषा या संप्रेषण में काम में ली जाने वाली भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते है उनकी सीखनें की क्षमता अन्य भाषा में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होती है इसलिए उनका उपलब्धि स्तर उच्च होता है तथा रचनात्मक कार्यो में इनकी सहभागिता का औसत अधिक रहता है और अभिव्यक्ति स्तर भी अच्छा रहता है। अतः शोधकर्त्री का मत है कि बालकों के सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, सत्यदेव, ''शिक्षा सिद्धांत एवं दर्शन'' प्रकाशक – विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर।
2. जौहरी, बी. पी., पाठक, पी. डी. ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' प्रकाशक – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. भटनागर, सुरेश, सक्सेना, अनामिका ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं'' प्रकाशक – विनय रखेजा आर.लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ।
4. प्राथमिक शिक्षक, शैक्षिक संवाद की पत्रिका अंक – 3, जुलाई, 2010 प्रकाशक – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
5. दत, सुनीति, अरोङा, कमला, चौपङा, रविकांता, ''उभरते भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा'' प्रकाशक – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली।
6. पाठक, पी. डी., ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. पं. चतुर्वेदी, सीताराम, ''भारत में सार्वजनिक शिक्षा का इतिहास'' प्रकाशक – हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी, उ. प्र.।
8. मदन, मोहन, डॉ. सारस्वत, मालती, 'भारतीय शिक्षा का इतिहास'' प्रकाशक – कैलास प्रकाशन, इलाहबाद।

9. डॉ. दुबे, मनीष, ''शिक्षा के सामाजिक आधार'' प्रकाशक – कुलसचिव महात्मा गाँधी चित्रकूट वि. वि., चित्रकूट, मध्यप्रदेश।
10. डॉ. सिंह, राणा बलवंत, ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास'' प्रकाशक – श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, उतरप्रदेश।

www.sodhgangotri.inflibnet.ac.in
www.education.inindia.net
www.academia.edu
www.rashtriyashiksha.com